Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 4, July-2021, ISSN 2230-7540

स्वामी विवेकानंद की मानव निर्माण शिक्षा में शिक्षक का महत्व

कु० रेनू[1*], डॉ. भूपेंद्र सिंह चौहान[2]

[1] पीएच.डी शोधकर्ता, सनराईस विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

[2] सह-प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, सनराईस विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सार *- स्वामी विवेकानंद बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। दुनिया ने उन्हें एक देशभक्त संत, कला और वास्तुकला के प्रेमी, एक शास्त्रीय गायक, महान आकर्षण के एक प्रमुख वक्ता, एक दूरदर्शी, एक दार्शनिक, एक शिक्षाविद् और सबसे बढ़कर मानवता के उपासक के रूप में पाया। उन्होंने कहा कि शिक्षा को "जीवन-निर्माण, मानव-निर्माण और चरित्र-निर्माण विचारों को आत्मसात करना" प्रदान करना चाहिए। उनके शैक्षिक विचार प्रेम, शांति और समानता पर आधारित थे, जिसने पूरी दुनिया को जोड़ा। वह बुद्धिजीवियों की आकाशगंगा में एक चमकते सितारे की तरह चमकता है। वे नए प्रकाश, नए पथ और मानवतावाद के पथ प्रदर्शक थे। भारत की सोच और संस्कृति में उनका योगदान किसी से पीछे नहीं है। आधुनिक भारत को जगाने में उनका योगदान इसकी तरह और गुणवत्ता में आलोचनात्मक है। यदि शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन के सबसे शक्तिशाली साधन के रूप में देखा जाता है, तो शैक्षिक विचार में उनका योगदान सर्वोपरि है। वह शिक्षा को "ईश्वरीय पूर्णता की अभिव्यक्ति के रूप में परिभाषित करता है जो पहले से ही मनुष्य में है। स्वामीजी की मानव-निर्माण शिक्षा उनके जीवन के वेदांत दर्शन पर आधारित है। विवेकानंद के लिए मानव-निर्माण शिक्षा का अर्थ मनुष्य को उसके आवश्यक दिव्य स्वभाव के बारे में जागरूकता के लिए जगाना था, जिससे वह हमेशा अपनी सहज आध्यात्मिक शक्ति पर निर्भर रहता था।*

वर्तमान पेपर स्वामी विवेकानंद की मनुष्य की अवधारणा, मनुष्य के लक्षण, मानव-निर्माण शिक्षा की अवधारणा और तत्व, और मानव-निर्माण शिक्षा में शिक्षक की भूमिका को उजागर करना चाहता है।

विशेष शब्द *- मनुष्य, शिक्षक, शिक्षा, मानव-निर्माण शिक्षा।*

----------X----------

परिचय

"सभी शिक्षा, सभी प्रशिक्षण का आदर्श मानव-निर्माण होना चाहिए। लेकिन, इसके बजाय, हम हमेशा बाहर को चमकाने की कोशिश कर रहे हैं। जब अंदर नहीं है तो बाहर को चमकाने से क्या फायदा?"

----- स्वामी विवेकानंद (सीडब्ल्यू 2:15)

स्वामी विवेकानंद का विचार है कि शिक्षा ज्ञान की जानकारी नहीं है जो बल द्वारा बच्चे के दिमाग में डाली जाएगी (निथिया, 2012)। ज्ञान मनुष्य में निहित है, कोई ज्ञान बाहर से नहीं आता; यह सब अंदर है। स्वामी विवेकानंद बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। दुनिया ने उन्हें एक देशभक्त संत, कला और वास्तुकला के प्रेमी, एक शास्त्रीय गायक, महान आकर्षण के एक प्रमुख वक्ता, एक दूरदर्शी, एक दार्शनिक, एक शिक्षाविद् और सबसे बढ़कर मानवता के उपासक के रूप में पाया। स्वामी विवेकानंद के अनुसार अपने आप को सिखाओ, सभी को उसका वास्तविक स्वरूप सिखाओ, सोई हुई आत्मा को बुलाओ और देखो कि वह कैसे जागती है। शक्ति आएगी, महिमा आएगी, अच्छाई आएगी, पवित्रता आएगी और जो कुछ भी उत्कृष्ट है वह तब आएगा जब यह सोई हुई आत्मा आत्म-चेतन गतिविधि के लिए जागृत होगी (बनर्जी और मीता, 2015)। स्वामी विवेकानंद भारतीय लोगों के सांस्कृतिक

www.ignited.in

और आध्यात्मिक इतिहास में एक अग्रणी व्यक्ति हैं। शिक्षा के बारे में उनका दूरगामी विचार समय के साथ दुनिया भर में विचारशील लोगों की बढ़ती संख्या को प्रभावित कर रहा है। उन्होंने सत्य का सार, वेदांत, पुरुषों का भाईचारा, मानवता की एकता, धर्मों की सद्भाव और भौतिकवाद पर अध्यात्म की सर्वोच्चता का प्रचार किया। वह एक पूर्व के अध्यात्मवाद और पश्चिम के भौतिकवाद के बीच सम्मिश्रण में खुशी लाने में सक्षम हो सकता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा को "जीवन-निर्माण, मानव-निर्माण और चरित्र-निर्माण विचारों को आत्मसात करना" (सीडब्ल्यू.3.302) प्रदान करना चाहिए।

स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि यह सोचना गलत है कि हम बच्चे के विकास को बढ़ावा देते हैं। वास्तव में, वह स्वयं अपने विकास को आगे बढ़ाता है। वे कहते हैं, "हर कोई अपने स्वभाव के अनुसार विकसित होता है। समय आने पर सभी को इस सच्चाई का पता चल जाएगा। क्या आपको लगता है कि आप एक बच्चे को शिक्षित कर सकते हैं? बच्चा खुद को शिक्षित करेगा, आपका काम उसे आवश्यक अवसर प्रदान करना और उसके रास्ते में आने वाली बाधाओं को दूर करना है। वह स्वयं ही शिक्षा ग्रहण करेगा। एक पौधा अपने आप बढ़ता है, क्या माली उसे उगाता है? वह इसे केवल आवश्यक वातावरण प्रदान करता है; यह पौधा ही है जो अपना विकास स्वयं करता है।" इस प्रकार स्वामी विवेकानंद स्वयं के सिद्धांत की वकालत करते हैं-शिक्षा। वह बुद्धिजीवियों की आकाशगंगा में एक चमकते सितारे की तरह चमकता है। वे नए प्रकाश, नए पथ और मानवतावाद के पथ प्रदर्शक थे। भारत की सोच और संस्कृति में उनका योगदान दूसरे नंबर पर है। उन्होंने अपने सर्वांगीण प्रयासों के माध्यम से भारत के पतन के कारणों का पता लगाने और उन्हें दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने महसूस किया कि भारत के पतन का मुख्य कारण जनता की उपेक्षा है। विवेकानंद सभी के बीच एकता की भावना विकसित करना चाहते हैं, एकता जो भारत की स्थिरता और प्रगति के लिए एकमात्र आश्वस्त सिद्धांत है। आधुनिक भारत को जगाने में उनका योगदान इसकी तरह और गुणवत्ता में आलोचनात्मक है। यदि शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन के सबसे शक्तिशाली साधन के रूप में देखा जाता है, तो शैक्षिक विचार में उनका योगदान सर्वोपरि है।

आज हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं। यह आविष्कारों का युग है जो नवाचार करता है। भारत की साक्षरता दर में वृद्धि होती है। और भारत का नागरिक शिक्षित नहीं साक्षर बनता है। वे लिख और बोल सकते हैं, लेकिन उन्हें समझ में नहीं आया कि क्या लिखा गया है और यह क्यों लिखा गया है एक सरल उदाहरण अवधारणा को स्पष्ट कर सकता है, हम सभी सिगरेट के पैकेट पर लिखी वैधानिक चेतावनी पढ़ सकते हैं, धूम्रपान से कैंसर होता है लेकिन हम इसे नहीं लेते हैं। गंभीरता से, हम इसे समझ नहीं सकते हैं या हम इसे समझना नहीं चाहते हैं। यह एक महान उदाहरण है कि हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली कई शिक्षित निरक्षर पैदा करती है जो सब कुछ जानते हैं लेकिन कभी नहीं उन्हें अपने जीवन में अभ्यास करने का प्रयास करें। हम ऐसी शिक्षा का क्या करेंगे जिसका कोई व्यावहारिक प्रभाव नहीं है? शिक्षा एक व्यवसाय बन गया है और किसी को शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य की परवाह नहीं है और व्यक्ति को दान में अधिक भुगतान करना पड़ता है और कोई वास्तविक शिक्षा नहीं मिलती है। आज की शिक्षा केवल पैसा कमाने की मशीनें पैदा करती है। नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। सामाजिक ताना-बाना कमजोर होता जा रहा है। हम सैद्धांतिक ज्ञान आधारित शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। यह मूल्य क्षरण, भ्रष्टाचार, गैरकानूनी गतिविधियों आदि को उत्पन्न करता है। शिक्षा शब्द स्वयं "एडुसेरे" शब्द से आया है जिसका अर्थ है कि जो पहले से है और जो नहीं है, उसे बाहर लाना है। शिक्षा का उद्देश्य प्रतिभा को सक्रिय रूप से पहचानना है (माधवी, 2014)। वास्तविक शिक्षा वह है जो व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़ा होने में सक्षम बनाती है। भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त करने और अपनी शिक्षा नीति तैयार करने से बहुत पहले, स्वामी विवेकानंद ने एक वास्तविक शिक्षा की आवश्यकता को समझा था जो एक व्यक्ति के भीतर आंतरिक सुपर क्षमताओं को बढ़ाती है।

अध्ययन का उद्देश्य

यह लेख लेखक द्वारा निम्नलिखित उद्देश्यों को प्रस्तुत करने और उनका अवलोकन करने का एक प्रयास है:

1. स्वामी विवेकानंद की अवधारणा और मनुष्य की विशेषताओं और मानव निर्माण शिक्षा के तत्वों को इंगित करना।

2. मानव-निर्माण शिक्षा में शिक्षक की भूमिका को जानना।

अध्ययन की पद्धति: यह अध्ययन पूर्णतः सैद्धान्तिक आधारित था। अध्ययन के लिए जानकारी मुख्य रूप से दो प्रमुख स्रोतों से एकत्र की गई है अर्थात स्वामी विवेकानंद की जीवनी का अध्ययन केवल डेटा संग्रह के

प्राथमिक स्रोत के रूप में करने के लिए और माध्यमिक स्रोतों के रूप में, अन्वेषक को विभिन्न प्रकार की पुस्तकों, पत्रिकाओं, लिखित लेखों से डेटा एकत्र किया गया था। स्वामी विवेकानंद की मानव निर्माण शिक्षा के बारे में महान शिक्षकों द्वारा। अध्ययन केवल स्वामी की मानव-निर्माण शिक्षा तक ही सीमित था|

चर्चाएँ:

उद्देश्य संख्या 1: स्वामी विवेकानंद की मनुष्य की अवधारणा:

स्वामी विवेकानंद की मनुष्य में बहुत आस्था है। वह सोचता है कि मनुष्य ईश्वर की सर्वोच्च रचना है। विवेकानंद ने कहा, "यदि आप वास्तव में मनुष्य के चरित्र को आंकना चाहते हैं, तो उसके महान प्रदर्शन को न देखें। एक आदमी को उसके सामान्य कार्यों को करते हुए देखो।" ये क्रियाएं एक व्यक्ति को प्रकट करती हैं कि वह वास्तव में कैसा है। विवेकानंद के गुरु, श्री रामकृष्ण, कहा करते थे कि मानुष को मनुष्य होना चाहिए और चुप रहना चाहिए - अर्थात मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनने की आवश्यकता है। "वह अकेला एक आदमी है," उन्होंने कहा, "जिसकी आध्यात्मिक चेतना जागृत हुई है"। अपने गुरु के बाद, विवेकानंद ने जोर दिया कि "सभी शिक्षा का आदर्श, सभी प्रशिक्षण, यह मानव-निर्माण होना चाहिए"।

MAN तीन अक्षरों का संयोजन है, अर्थात:

एम = नैतिकता

ए = क्षमता

एन = बड़प्पन

वह किसी व्यक्ति को शिक्षित नहीं मानता यदि वह कुछ परीक्षा उत्तीर्ण करने और अच्छे व्याख्यान देने का प्रबंधन करता है। सभी व्यवस्थाओं का आधार, सामाजिक या राजनीतिक, मनुष्य की अच्छाई पर टिका है।

मनुष्य के लक्षण:

- विवेकानंद की "आत्मा की संभावित दिव्यता" की अवधारणा आदर्श मनुष्य की एक नई, शानदार अवधारणा देती है।
- वर्तमान युग मानवतावाद का युग है जो मानता है कि मनुष्य को सभी गतिविधियों और सोच का मुख्य सरोकार और केंद्र होना चाहिए।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से मनुष्य ने महान समृद्धि और शक्ति प्राप्त की है, और संचार और यात्रा के आधुनिक तरीकों ने मानव समाज को "वैश्विक गांव" में बदल दिया है।
- विवेकानंद की आत्मा की संभावित दिव्यता की अवधारणा इस गिरावट को रोकती है, मानवीय रिश्तों को दिव्य बनाती है, और जीवन को सार्थक और जीने लायक बनाती है।
- स्वामीजी ने "आध्यात्मिक मानवतावाद" की नींव रखी है, जो कई नव-मानवतावादी आंदोलनों और दुनिया भर में ध्यान में वर्तमान रुचि के माध्यम से स्वयं को प्रकट कर रहा है।
- प्रत्येक व्यक्ति का चरित्र छापों के कुल योग से निर्धारित होता है। अच्छा प्रभाव हो तो चरित्र अच्छा बनता है। बुरा हो तो बुरा हो जाता है

विवेकानंद के अनुसार मनुष्य की पूजा ही ईश्वर की वास्तविक पूजा है। व्यक्तिगत खुशी सार्वभौमिक खुशी के साथ निहित है। स्वामी विवेकानंद ने महसूस किया कि प्रत्येक व्यक्ति को महान, प्रत्येक राष्ट्र को महान बनाने के लिए तीन चीजें आवश्यक हैं।

- अच्छाई की शक्तियों का दृढ़ विश्वास।
- ईर्ष्या और संदेह का अभाव।
- उन सभी की मदद करना जो अच्छा बनने और अच्छा करने की कोशिश कर रहे हैं।

स्वामी विवेकानंद की मानव-निर्माण शिक्षा:

स्वामी विवेकानंद की महत्वपूर्ण अवधारणाओं में से एक युवाओं के बीच एक मजबूत चरित्र के निर्माण का मुद्दा है। उन्होंने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की वकालत की जो वास्तव में मानव निर्माण और चरित्र निर्माण हो। शिक्षा पर विवेकानंद की दृष्टि शारीरिक शिक्षा, नैतिक और धार्मिक शिक्षा, शिक्षा का माध्यम, महिला शिक्षा और समाज के कमजोर वर्गों के लिए शिक्षा से संबंधित है और

शिक्षा की उनकी अवधारणा को इस ग्यारह शब्दों के भीतर समाहित किया जा सकता है "शिक्षा ईश्वरीय पूर्णता की अभिव्यक्ति है। पहले से ही मनुष्य में है।" इस कथन से तीन महत्वपूर्ण संदेश निकले - मैनिफेस्टेशन, द परफेक्शन, पहले से ही मनुष्य में। लेकिन विवेकानंद की मानव निर्माण शिक्षा एक बहुत व्यापक अवधारणा है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि शिक्षा सभी बुराइयों का रामबाण इलाज है। उनका दृढ़ विश्वास था कि केवल सही प्रकार की शिक्षा से ही व्यक्तियों का रूपान्तरण किया जा सकता है।

स्वामी विवेकानंद ने "गरीबों के रूप में दिव्य" को देखा जिसे उन्होंने 'दरिद्र नारायण'

कहा। यह मानव-निर्माण शिक्षा की दिशा को दर्शाता है। इसका तात्पर्य यह है कि शिक्षा में सेवा की भावना विकसित होनी चाहिए और गरीबों और जरूरतमंदों को खुद को ऊपर उठाने में मदद करनी चाहिए। मानव-निर्माण शिक्षा 1893 में शिकागो में आयोजित धर्म संसद में विवेकानंद द्वारा कहे गए प्रसिद्ध शब्दों के महत्व को भी सामने लाती है। ये थे:

सहायता, आत्मसात, सद्भाव और शांति तदनुसार शिक्षा को मनुष्य में इन गुणों का विकास करना चाहिए। मानव-निर्माण शिक्षा चरित्र विकास के साथ-साथ व्यावसायिक विकास में निहित है (गुप्ता, एस।, 2009) स्वामी विवेकानंद ने कहा: "मानव-निर्माण मेरे जीवन का मिशन है। मैं कोई राजनेता नहीं हूं, न ही मैं एक समाज सुधारक हूं। फैशन मैन करना मेरा काम है... मैं केवल आत्मा की परवाह करता हूं: जब यह सही होगा, तो सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा" "मनुष्य-निर्माण" इस स्वामीजी ने अपने "नए सुसमाचार" के रूप में बात की, इसे न केवल संन्यासियों पर लागू किया। न केवल भारतीयों के लिए, बल्कि सबसे गहन अर्थों में, हर जगह पुरुषों और महिलाओं के लिए। वास्तव में, मनुष्यों को बनाना और स्वामीजी की भाषा में गठित सर्वोच्च सत्य को एक और एक ही मिशन- और यह मिशन, उनके दिमाग में, पृथ्वी पर उनके जीवन का केंद्रीय कार्य बना।

मानव-निर्माण: इसका वास्तव में मतलब है कि अंधों की जाति को उसकी सहज आध्यात्मिक शक्ति और आवश्यक दैवीय प्रकृति के प्रति जागरुक करना। मनुष्य किसी भी तरह से किसी भी मूल "पाप" का उत्तराधिकारी नहीं है, बल्कि, वास्तव में, "अमृतस्य पुत्री, अमरता की संतान है। मानवता के लिए ऐसा है वेदांत का मैग्ना कार्टा। मानव-निर्माण उनका मुख्य पूर्व-व्यवसाय था, क्योंकि वे इस तरह के एक स्वतंत्र, निडर चरित्र, ज्ञान और प्रेम में विश्वास करते थे जो दुनिया की आशा रखते थे। समाज में पाई जाने वाली सभी बीमारियों का एकमात्र समाधान मनुष्य का परिवर्तन है (बेहरा, 2015)। विवेकानंद के लिए मानव-निर्माण का अर्थ मनुष्य को उसकी आवश्यक दिव्य प्रकृति के बारे में जागरूकता के लिए जगाना है, जिससे वह हमेशा अपनी सहज आध्यात्मिक शक्ति पर भरोसा करता है।

स्वामी विवेकानंद के शब्द, "सभी शिक्षा का अंत, सभी प्रशिक्षण मानव-निर्माण होना चाहिए"। यह मनुष्य बनाने वाला धर्म है जो हम चाहते हैं। यह मनुष्य बनाने वाले सिद्धांत हैं जो हम चाहते हैं। हम चाहते हैं कि मनुष्य शिक्षा को सर्वांगीण बना दे|

मानव-निर्माण शिक्षा के तत्व:

- ✓ सभी शिक्षा, सभी प्रशिक्षणों का अंत मानव-निर्माण होना चाहिए। उसके लिए मानव निर्माण का अर्थ है शरीर, मन और आत्मा का सामंजस्यपूर्ण विकास। स्वामी विवेकानंद के प्रमुख तत्व।
- ✓ मानव-निर्माण की शिक्षा उनके जीवन के वेदांत दर्शन पर आधारित है।
- ✓ मनुष्य बनाने वाली शिक्षा को ऐसे व्यक्तियों का विकास करना चाहिए जो नैतिक रूप से स्वस्थ, बौद्धिक रूप से तेज, शारीरिक रूप से मजबूत, धार्मिक रूप से उदार, आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध और व्यावसायिक रूप से पर्याप्त हों।
- ✓ प्रत्येक व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य "निर्माता के साथ एकता" प्राप्त करना है।
- ✓ सामाजिक समानता की प्राप्ति।
- ✓ मनुष्य को सभी धर्मों के प्रति सम्मान की भावना विकसित करनी चाहिए। उसे समझना चाहिए कि सभी धर्मों के आवश्यक तत्व समान हैं, और कोई भी धर्म दूसरे से श्रेष्ठ या निम्न नहीं है।
- ✓ मनुष्य को सबके प्रति प्रेम और किसी से घृणा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि प्रेम सभी धर्मों में सर्वोच्च भलाई है।

www.ignited.in

- ✓ मनुष्य की सेवा ईश्वर की भक्ति के समान है क्योंकि ईश्वर प्रत्येक मानव हृदय में निवास करता है।
- ✓ मनुष्य बनाने वाली शिक्षा का अर्थ है मनुष्य को उसके सच्चे स्व के प्रति जागरूक करना।
- ✓ मनुष्य को विज्ञान और अध्यात्म का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। स्वामीजी ने विज्ञान और अध्यात्म के बीच एक संश्लेषण विकसित किया।

स्वामी विवेकानंद मानवता के पैगम्बर थे। मनुष्य की उनकी अवधारणा पूर्व और पश्चिम की सांस्कृतिक सीमाओं से परे है। वह एक तर्कवादी थे और एक व्यक्ति को जीवन में एक तर्कसंगत दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए।

उद्देश्य -2: मानव निर्माण शिक्षा में शिक्षक की भूमिका:

- ✓ मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज की उपज है और समाज अपने विकास के लिए व्यक्ति पर निर्भर करता है। मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी बनाने के लिए हमें एक शिक्षक के मजबूत हाथ की आवश्यकता है।
- ✓ आज शिक्षक को प्रोत्साहन, समर्थन और सुविधा प्रदान करने वाली विभिन्न भूमिकाएँ निभानी होती हैं। महान शिक्षक महान छात्र बनाने में मदद करते हैं। शिक्षक ने समाज के इष्टतम विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- ✓ शिक्षक हमारी आने वाली पीढ़ियों के वास्तुकार के रूप में। शिक्षक छात्रों के लिए रोल मॉडल होते हैं और कक्षा में हर दिन अच्छे चरित्र के उदाहरण प्रदान कर सकते हैं।
- ✓ मनु के उद्देश्य में शिक्षा शिक्षक बनाने में एक महान भूमिका निभाई। एक शिक्षक छात्रों के चरित्र, शरीर और दिमाग का निर्माण कर सकता है। विवेकानंद कहते हैं, "शिक्षा शिक्षक के साथ एक व्यक्तिगत संपर्क है" (गुरुगृहवास)। एक शिक्षक के व्यक्तिगत जीवन के बिना कोई शिक्षा नहीं होगी। यह मनुष्य का व्यक्तित्व है जो वास्तव में हमें प्रभावित करता है, न कि केवल उसके शब्द। शब्द और विचार केवल एक-तिहाई का योगदान करते हैं और व्यक्तित्व दो-तिहाई वास्तविक मनुष्य के निर्माण में होता है।
- ✓ विवेकानंद कहते हैं कि बच्चा खुद पढ़ाता है। लेकिन एक शिक्षक इसे अपने तरीके से आगे बढ़ने में मदद कर सकता है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार त्याग की प्रवृत्ति वाला व्यक्ति, अपने आदर्श उदाहरण के माध्यम से बच्चों को प्रभावित करता है, अपने छात्रों से प्यार करता है, उनकी कठिनाइयों पर सहानुभूति रखता है, उनकी जरूरतों, क्षमताओं और रुचियों के अनुसार शिक्षण करता है, उनके आध्यात्मिक विकास में योगदान देता है, वह एक अच्छा हो सकता है। शिक्षक। मैन मेकिंग एजुकेशन में अलग-अलग भूमिकाएँ हैं:

इस प्रकार है:

- ➢ मानव-निर्माण की शिक्षा के लिए शिक्षक को विद्यार्थियों के स्तर तक उतरकर अपनी आत्मा को विद्यार्थी की आत्मा में स्थानान्तरित करना चाहिए।
- ➢ एक प्राचीन गुरु की तरह निस्वार्थ सेवा करने की दृष्टि से एक शिक्षक को शिक्षण पेशे के लिए समर्पित होना चाहिए।
- ➢ उसे अपने छात्रों के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए।
- ➢ शिक्षण के कार्य के पीछे एक शिक्षक के पास एक मिशनरी उत्साह और दिव्य उद्देश्य होना चाहिए।
- ➢ सच्चा मनुष्य बनाने के लिए शिक्षक को मित्र, दार्शनिक, मार्गदर्शक और त्यागी होना चाहिए।
- ➢ स्वामी विवेकानंद चाहते हैं कि शिक्षक बच्चे को प्राकृतिक रूप से विकसित होने के लिए उचित वातावरण प्रदान करे।
- ➢ शिक्षक प्रत्येक बच्चे के शैक्षिक अनुभव का निर्धारण करते हैं। विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में इनकी अहम भूमिका होती है।
- ➢ शिक्षक को सकारात्मक विचार देना चाहिए; लोग बड़े होकर पुरुष बनेंगे और अपने पैरों पर खड़े होना सीखेंगे।
- ➢ शिक्षक को बच्चे को सही रास्ते पर ले जाना चाहिए।
- ➢ छात्र को उसकी क्षमता, योग्यता और प्रतिभा की खोज के लिए प्रदर्शन, राजी करना और प्रेरित करना।

- शिक्षक को एकाग्रता और गहन ध्यान द्वारा मन को विकसित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए।

- शिक्षक को छात्रों को ज्ञान प्राप्त करने और उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण, धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण और नागरिक जिम्मेदारी विकसित करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

एक शिक्षक की जिम्मेदारी की व्याख्या करने के लिए, स्वामीजी एक पौधे की वृद्धि का उल्लेख करते हैं। एक पौधे के मामले में, उसे पानी, हवा और खाद देने के अलावा और कुछ नहीं किया जा सकता है जबकि यह अपनी प्रकृति से बढ़ता है। ऐसा ही एक बच्चे के मामले में होता है। विवेकानंद की शिक्षा पद्धति आधुनिक शिक्षाविदों की अनुमानी पद्धति से मिलती जुलती है। इस प्रणाली के दौरान, शिक्षक छात्र में पूछताछ की भावना का आह्वान करता है, जिसे शिक्षक के पूर्वाग्रह मुक्त मार्गदर्शन के तहत अपने लिए चीजों का पता लगाना होता है।

निष्कर्ष

मानव निर्माण शिक्षा पर स्वामी विवेकानंद के विचार और मानव निर्माण शिक्षा में शिक्षक की भूमिका हमारे दिन-प्रतिदिन के समाज में बहुत प्रासंगिक हैं। मैन मेकिंग एजुकेशन कई समस्याओं का समाधान करती है जो हाल के दिनों में उठाई गई हैं। उनके प्रसिद्ध शब्द; "जागो, उठो, और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए" - अभी भी राष्ट्र के युवाओं में गूंजता है, उनकी सामाजिक चेतना को जगाता है और उनकी नम आत्माओं को जगाता है। हम स्वामी विवेकानंद के शब्दों के साथ योग करते हैं:

हमारे निचले वर्गों को जो सेवा देनी है, वह है उन्हें शिक्षा देना; उनके खोए हुए व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए। उन्हें विचार दें- उन्हें केवल यही मदद चाहिए और फिर बाकी प्रभाव के रूप में अनुसरण करेंगे। हमारा है रसायनों को एक साथ रखना, क्रिस्टलीकरण प्रकृति के नियम में आता है। अब यदि पहाड़ मोहम्मद के पास नहीं आ सकता, तो मोहम्मद को पहाड़ पर जाना ही होगा। अगर गरीब लड़का शिक्षा के लिए नहीं आ सकता है, तो शिक्षा उसके पास जानी चाहिए। यह सच है और आज तक हमारे देश में इसकी प्रासंगिकता है। आम जनता को शिक्षित करने में शिक्षक की अहम भूमिका होती है।

संदर्भ

1. अग्रवाल, जे.सी. (2010), थ्योरी एंड प्रिंसिपल्स ऑफ एजुकेशन, यूपी: विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।

2. अविनाशीलिंगम, टी.एस. (1957), स्वामी विवेकानंद, श्री रामकृष्ण मठ, मायलापुर, चेन्नई के भाषणों और लेखन से शिक्षा का अनुपालन।

3. बनर्जी, के.ए., मीता, एम. (2015)। स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन। शैक्षिक अनुसंधान और विकास के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल वॉल्यूम। 4(3), पीपी 030-035।

4. बेहरा, एस.के. (2015)। स्वामी के आलोक में मानव-निर्माण की शिक्षा विवेकानंद।

5. स्वामी विवेकानंद का पूर्ण कार्य, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 1962, (इसके बाद सीडब्ल्यू) 2.15; 3.302.

6. दास, बी.एन. (1994), फाउंडेशन ऑफ एजुकेशनल थॉट एंड प्रैक्टिस, नई दिल्ली: कल्याणी पब्लिशर्स।

7. गुप्ता, एस. (2009), एजुकेशन इन इमर्जिंग इंडिया, नई दिल्ली: शिप्रा प्रकाशन।

8. माधवी, बी. (2014)। ए ग्लेंस एट एजुकेशनल फिलॉसफी इन इंडियन माइथोलॉजी एंड इट्स टाइमलेसनेस। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ द फ्रंटियर्स ऑफ इंग्लिश लिटरेचर एंड द पैटर्न्स ऑफ ईएलटी, वॉल्यूम 2, अंक 1।

9. निथिया, पी. (2012)। शिक्षा के दर्शन पर स्वामी विवेकानंद के विचार। एशियन जर्नल ऑफ मल्टीडायमेंशनल रिसर्च Vol.1, अंक 6.

10. नायक, बी.के. (2006), फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन, कटक: किताब महल।

11. सक्सेना, एन.आर. स्वरूप (2006), फिलॉसॉफिकल एंड सोशियोलॉजिकल फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन, मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।

12. स्वामी विवेकानंद (2009), (किरण वालिया, कमांडर), माई आइडियल ऑफ एजुकेशन, कोलकाता: अद्वैत आश्रम।

ऑनलाइन संसाधन

- www.ramakrishnavivekananda.info/vivekananda/complete_works.htm
- www.en.wikipedia.org/wiki/Teachings_and_philosophy_of_Swami_Vivekananda
- .www.slideshare.net/DvlPanchal/swami-vivekanand-as-a-contributor.
- www.educational-system.blogspot.in/2012/03/educational-contributions-of-swami.html.
- www.awakeningindia.org.
- http://profchamanlalbanga.blogspot.in/2011/10/role-of-swami-vivekanandas-man-making.html.
- https://nextfuture.aurosociety.org/man-making-education.
- http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/73933/12/12_chapter%205.pd
- http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/71150/9/09_chapter%201.pdf.
- http://www.sakaltimes.com/opinion/vivekananda%E2%80%99s-teachings-are-more-relevant-today-11657.
- http://www.vivekanandagospel.org/man_making.html
- http://www.swamivivekanandaquotes.org

Corresponding Author

कु० रेनू*

पीएच.डी शोधकर्ता, सनराईस विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान